प्रभु तेरा ये कैसा रहेम

- पूज्य हीररत्न विजय महाराज साहेब

(राग: ये तो सच है की भगवान है)

प्रभु तेरा ये कैसा रहेम, मैं भटकता था जन्मोजनम (२)
अति भारी है मेरे करम, दिया फिर भी ये मानव जनम
प्रभु तेरा ये कैसा रहेम ...

आर्य देश सुकुल, निरोगी ये शरीर, पंचेन्द्रिय पूर्णका दिर्घायु भी,
हो हो हो ...
तीव्र बुध्धि भी दी, शुभ संयोग भी, धर्मकी बात भी मैंने सुन ली सभी
पर श्रध्धा है मेरी नरम, नहीं करता मैं मनसे धरम,
अति भारी है मेरे करम, दिया फिर भी ये मानव जनम,
प्रभु तेरा ये कैसा रहेम ...

शुध्ध देव गुरू धर्म मुझको दिया, शुभ संस्कारसे मुझे वासित किया,
हो हो हो ...
अति दुर्लभ है जो, इस संसारमें, अैसे कल्याण मित्रोंका योग दिया,
पर मोहका है आवरण, पडे उलटे ही मेरे चरण,
अति भारी है मेरे करम, दिया फिर भी ये मानव जनम,
प्रभु तेरा ये कैसा रहेम ...

धर्मकी आडमें, ठगा मैंने जगत, निज स्वार्थके हेतु बढाये भगत,
हो हो हो ...
निज दोष कभी, नहीं साफ किये, धर्मके नाम पर बडे पाप किये,
आयी मुझको न तेरी शरम, धर्मको मानता मैं भरम,
अति भारी है मेरे करम, दिया फिर भी ये मानव जनम,
प्रभु तेरा ये कैसा रहेम ...

खुब भटका हूं मैं, इस संसारमें, अब चाहूं नहीं, फिर अवतार मैं,
हो हो हो ...
नहीं करता भले, तुझसे प्यार मैं, पर ले ले मुझे, तेरे परिवारमें,
'हीर'की है ये विनती चरम, तेरी गुण रश्मि देना परम,
अति भारी है मेरे करम, दिया फिर भी ये मानव जनम,
प्रभु तेरा ये कैसा रहेम, मैं भटकता था जन्मोजनम
अति भारी है मेरे करम, दिया फिर भी ये मानव जनम

https://youtu.be/yIwa2yzYU14